Sociology of Religion PART -2-
Durkheim
DSE 01
SOCIOLOGY OF RELIGION

Dr. Utpal Kumar Chakraborty
Department of Sociology
ABM College, Jamshedpur

इस सिद्धान्त की पुष्टि में श्री दुर्खीम ने आस्ट्रेलिया की अरुण्टा जनजाति का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया है। उनका कहना है कि इन जनजातीय लोगों के जीवन का अध्ययन करने पर धार्मिक अनुभव की उत्पत्ति के संबंध में स्पष्ट धारणा हो सकती है और वह धारणा यह है कि धार्मिक अनुभव एक प्रकार की सामूहिक उत्तेजना के कारण है। त्यौहारों तथा उत्सवों पर जब गोत्र के सभी लोग एक साथ एकत्र होते हैं तो प्रत्येक सदस्य को ऐसा अनुभव होता है कि समूह की शक्ति उसकी वैयक्तिक शक्ति से कहीं अधिक उच्च और महान् है। ऐसा अनुभव करने के स्पष्ट कारण भी हैं। इन त्यौहारों तथा उत्सवों का अस्तित्व ही अनेक लोगों की उपस्थिति पर आधारित होता है। समान भावों, विचारों व रुचियों वाले अनेक व्यक्तियों के वैयक्तिक भावों, विचारों व रुचियों के सम्मेलन और संगठन से एक नवीन चेतना या उत्तेजना का निर्माण होता है।

यही सामूहिक शक्ति होती है जिसके सम्मुख प्रत्येक व्यक्ति को अनिवार्य रूप में झुकना पड़ता है। साथ ही, इन त्यौहारों तथा उत्सवों के अवसरों पर एकत्रित भीड़ में एक प्रकार का मानसिक उल्लास प्रदर्शित होता है। यह उल्लास सम्भवत: मानव की सामाजिक मूल-प्रवृत्ति के कारण है। ऐसे अवसरों में एक ही समय पर अनेक व्यक्ति एकत्रित रहते हैं और व्यक्ति के विचार व संवेग सभी उपस्थित व्यक्तियों के विचारों को प्रफुल्लित व उत्तेजित कर देता है। फलत: व्यक्ति की अपनी शक्ति गौण हो जाती है और समूह की शक्ति को प्रधानता मिलती है। व्यक्ति समूह की इस शक्ति के सामने झुकता है और उसकी शक्ति से प्रभावित होकर उसके मन में समूह की प्रति भय, श्रद्धा और भक्ति की भावना पनपती है। यह समूह को साधारण से श्रेष्ठ या महान् समझने लगता है। वस्तुत: यह समूह या समाज की धार्मिक पूजा का प्रतीक हो जाता है।

फिर भी इस सम्बन्ध में एक शंका रह ही जाती है। और वह यह कि पवित्रता की धारणा के पनपने का 'वास्तविक' आधार क्या है? इसके उत्तर में श्री दुर्खीम का कथन है कि टोटमवाद के आधार पर ही पवित्र और साधारण वस्तुओं में भेद करने की भावना का जन्म हुआ। अत: टोटमवाद ही समस्त धर्मों का प्राथमिक स्तर है। ऐसा टोटमवाद की प्रकृति से ही सम्भव हुआ क्योंकि टोटमवाद नैतिक कर्त्तव्यों और मौलिक विश्वासों की वह समष्टि है जिसके द्वारा समाज और पशु, पौधे या अन्य प्राकृतिक वस्तुओं के बीच एक पवित्र और अलौकिक संबंध स्थापित हो जाता है। इस टोटमवाद की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं–

(क) टोटम के साथ एक गोत्र के सदस्य अपना कई प्रकार का गूढ़, अलौकिक तथा पवित्र संबंध मानते हैं।

(ख) टोटम के साथ इस अलौकिक तथा पवित्र संबंध के आधार पर ही यह विश्वास किया जाता है कि टोटम उस शक्ति का अधिकारी है जो उस समूह की रक्षा करती है, सदस्यों को चेतावनी देती और भविष्यवाणी करती है।

(ग) टोटम के प्रति विशेष भय, श्रद्धा, भक्ति और आदर की भावना होती है। टोटाम को मारना, खाना या किसी प्रकार से चोट पहुँचाना निषिद्ध होता है और उसकी मृत्यु पर शोक प्रकट किया जाता है। टोटम, उसकी खाल और उससे संबंधित अन्य वस्तुओं को बहुत पवित्र माना जाता है। टोटम की खाल को विशेष अवसरों पर धारण किया जाता है; टोटम के चित्र बनवाकर रखे जाते हैं और शरीर पर उसके चित्र की गुदाई भी प्राय: सभी लोग करवाते हैं। टोटम संबंधी निषेधों का उल्लंघन करने वालों की समाज द्वारा निन्दा की जाती है और दूसरी ओर इससे संबंधित कुछ विशिष्ट नैतिक कर्तव्यों को प्रोत्साहित किया जाता है।

(घ) टोटम के प्रति भय, भक्ति और आदर की जो भावना होती है वह इस बात पर निर्भर नहीं होती कि कौन-सी वस्तु टोटम है या वह कैसी है, क्योंकि टोटम तो प्राय: अहानिकारक पशु या पौधा होता है। श्री दुर्खीम के मतानुसार टोटम सामुदायिक प्रतिनिधित्व का प्रतीक है और टोटम की उत्पत्ति उसी सामुदायिक रूप में समाज के प्रति अपनी श्रद्धाभाव के कारण हुई है। यही श्रद्धाभाव पवित्रता की भावना को जन्म देता है और टोटम-समूह के समस्त सदस्यों को एक नैतिक बन्धन में बाँधता है। यही कारण है कि टोटम-समूह के सभी सदस्य अपने को एक-दूसरे का भाई-बहन मानते हैं और वे आपस में कभी विवाह नहीं करते।

टोटमवाद की उपरोक्त विशेषताओं का उल्लेख करते हुए श्री दुर्खीम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि किसी भी धर्म की उत्पत्ति में उक्त सभी तत्वों का होना परमावश्यक है। इस कारण यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि टोटमवाद सब धर्मों का प्राथमिक रूप है क्योंकि टोटम एक समूह के नैतिक जीवन के सामूहिक प्रतिनिधित्व का प्रतीक है। इस प्रकार धर्म का मूल स्रोत तो स्वयं समाज है। और भी स्पष्ट शब्दों में, ईश्वर समाज की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति है।

अत: स्पष्ट है कि धर्म का संबंध किसी व्यक्ति से नहीं, बल्कि उसके सामूहिक जीवन से है। यहीं पर धर्म और जादू में अन्तर स्पष्ट हो जाता है। जादू में भी धर्म की भाँति अनेक विश्वास, संस्कार आदि होते हैं; फिर भी मूल रूप में जादू वैयक्तिक होता है। जादू का संबंध व्यक्ति-विशेष से होता है। इसी कारण जादू उस पर विश्वास करने वालों को एक समूह में संयुक्त नहीं कर पाता है। इसके विपरीत, धर्म का संबंध किसी व्यक्ति-विशेष से नहीं होता है; इसका आधार तो स्वयं समाज है। इसी कारण धर्म उस पर विश्वास करने वालों को एक नैतिक समुदाय में संयुक्त करता है। श्री दुर्खीम का मत है कि धर्म की कोई भी परिभाषा धर्म की इस विशेषता के आधार पर होनी चाहिए और इसी कारण आपके अनुसार धर्म की परिभाषा इस प्रकार है–"धर्म पवित्र वस्तुओं से सम्बन्धित विश्वासों और आचरणों की वह समग्र व्यवस्था है जो इन पर विश्वास करने वालों को एक नैतिक समुदाय में संयुक्त करती है।"

उपर्युक्त विवेचना से स्पष्ट है कि श्री दुर्खीम के धर्म-सम्बन्धी सामाजिक सिद्धान्त पवित्र और साधारण के बीच अन्तर पर आधारित हैं और इन दोनों में भेद करने की भावना का जन्म टोटमवाद के आधार पर हुआ। इस प्रकार धर्म की उत्पत्ति का प्रमुख स्त्रोत टोटम, या अन्तिम रूप में, समाज है क्योंकि टोटम समाज का ही सामूहिक प्रतिनिधि या प्रतीक है। टोटम के प्रति जो भय या आदर का रहस्यमय मनोभाव है और टोटम के साथ एक गोत्र के सदस्यों का जो गूढ़ और आलौकिक संबंध माना जाता है, उसी के आधार पर पवित्रता की भावना पनपती है। जिसके फलस्वरूप उस समूह के सभी सदस्यों में एक भाई-चारे की भावना जागृत होती है और वे एक नैतिक समुदाय में संयुक्त हो जाते हैं। यहीं से धर्म की नींव पड़ती है क्योंकि टोटम के आधार पर संयुक्त नैतिक-समूह जिस शक्ति का अधिकारी होता है उसी के सामने नतमस्तक हो जाता है।

श्री दुर्खीम के अनुसार धर्म के अनेक सामाजिक कार्य हैं। और सर्वप्रथम तो यह कि धर्म मानव-जीवन को दो स्पष्ट भागों-साधारण तथा पवित्र में बाँट देता है। धर्म अपने सदस्यों को इन दोनों में एक स्पष्ट भेद मानने तथा साधारण या अपवित्र कार्यों से दूर रहने की शिक्षा देता है क्योंकि पवित्र जीवन से दूर हो जाना धार्मिक भ्रष्टाचार है। इस प्रकार धर्म लोगों को पवित्र क्रियाओं को करने की दीक्षा देता है, ताकि वे पापात्मक परिणामों से मुक्त रह सकें। यह उन्हें अपवित्र कार्यों के करने पर धार्मिक शुद्धि करने का आदेश देता है। धर्म लोगों को यह भी शिक्षा देता है कि धार्मिक सेवाओं के स्थानों को उन स्थानों से दूर रखा जाए जहाँ साधारण कार्य किए जाते हैं। आराधना या पूजा का स्थान पवित्र स्थान है, इस कारण ऐसे स्थानों को साधारण कार्यों के करने के लिए उपयोग में नहीं लाना चाहिए। इसी प्रकार पवित्र और साधारण कार्यों को करने के लिए अलग-अलग समय भी निश्चित दिनों को निर्धारित करता है। जैसे, ईसाईयों में रविवार प्रार्थना का दिन है।

श्री सोरोकिन ने श्री दुर्खीम के उपर्युक्त सिद्धान्त का संक्षिप्त सार इस प्रकार दिया है–(क) धर्म का मूल कारण समाज स्वयं है; (ख) धार्मिक अवधारणाएँ समाज की विशेषताओं की प्रतीक के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है; (ग) पवित्र या ईश्वर समाज का ही मूर्त रूप है; और (घ) धर्म का प्रमुख कार्य सामाजिक एकता को उत्पन्न करना तथा स्थिर रखना है।

श्री **अलेक्जेण्डर गोल्डेनविजर तथा अन्य** विद्वानों ने श्री दुर्खीम के उक्त सिद्धान्त की आलोचना करते हुए लिखा है कि प्रथमत: श्री दुर्खीम का यह कथन कि टोटमवाद धर्म का सर्वप्रमुख तथा सर्वप्रथम आधार है, गलत है। विभिन्न जनजातीय समाजों का अध्ययन इस बात की पुष्टि नहीं करता है। आदिवासी समाजों में धर्म और टोटम अपना-अपना पृथक् अस्तित्व रखते हैं। टोटमवाद में एक गोत्र टोटम को अपना मूल-पुरुष या सामान्य पूर्वज मानते हैं और उसे मानने वाले सभी व्यक्ति आपस में शादी-विवाह नहीं करते हैं। ये दोनों ही विशेषताएँ टोटमवाद में अनिवार्य हैं, परन्तु धर्म में इन दोनों का ही अभाव होता है। अगर धर्म का आधार टोटमवाद ही होता तो अब तक ये दोनों घुल-मिलकर एक हो गए होते।

द्वितीयतः, केवल पवित्र और साधारण इन दो धारणाओं के आधार पर धर्म को समझा या समझाया नहीं जा सकता। इस प्रकार का भेदभाव आदिम समाजों में स्पष्ट हो सकता है, परन्तु आधुनिक समाज में इन दोनों के बीच स्पष्ट विभाजक रेखा खींचना कठिन है। तृतीयतः, धर्म की उत्पत्ति में सामाजिक कारक महत्त्वपूर्ण हैं, इस सत्य को कोई भी अस्वीकार नहीं करेगा; परन्तु यह कहना उचित व वैज्ञानिक न होगा कि धर्म की उत्पत्ति में समाज ही एकमात्र कारण है। श्री दुर्खीम ने यह कहकर, कि "समाज ही वास्तविक देवता है," समाज को आवश्यकता से अधिक महत्त्व प्रदान करने की त्रुटि की है।

सारांश

- दुर्खीम ने अपने 'धार्मिक जीवन के प्रारम्भिक स्वरूप' नामक पुस्तक में सामाजिक जीवन में धर्म की विशिष्ट भूमिका को रेखांकित किया है। दुर्खीम ने अपनी व्याख्या में स्पष्ट किया है कि धर्म के कुछ सामाजिक प्रकार्य हैं, साथ ही यह सामाजिक कारकों की उपज है।
- टोटम के प्रति विशेष भय, श्रद्धा, भक्ति और आदर की भावना होती है। टोटम को मारना, खाना या किसी प्रकार से चोट पहुँचाना निषिद्ध होता है और उसकी मृत्यु पर शोक प्रकट किया जाता है।
- श्री दुर्खीम के अनुसार धर्म के अनेक सामाजिक कार्य हैं। और सर्वप्रथम तो यह कि धर्म मानव-जीवन को दो स्पष्ट भागों-साधारण तथा पवित्र में बाँट देता है।

अभ्यास-प्रश्न

1. दुर्खीम के धर्म संबंधी सिद्धान्त को स्पष्ट करें।
2. टोटमवाद की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।
3. टोटमवाद की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए दुर्खीम किस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं?